Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity - ISSN : 2279-0233
Continuous Issue-37 | December – January 2019

बौद्ध दर्शन और हिन्दी दलित कविता

हिन्दी दलित साहित्य जिस प्रकार बौद्ध दर्शन से प्रभावित रहा है, उसी प्रकार हिन्दी दलित कविता पर भी बौद्ध दर्शन का प्रभाव देखा गया है। बौद्ध दर्शन पाखण्ड एवं बाह्याडम्बर का विरोध करता हुआ सामाजिक न्याय एवं समता का सन्देश देता है, जिसमें सबसे प्रखर स्वर के रूप में सवतंत्रता, आत्मबोध, यथार्थ बोध की अभिव्यक्ति है और दूसरी तरफ जातिवाद, अवतारवाद के खंडन के स्वर को सुना जा सकता है। मध्यकाल के संत कवि जिन पर सिद्ध-नाथों का प्रभाव है वहाँ भी यह स्वर देखने को मिलता है जिसका उदाहरण सुन्दरदास के निम्नलिखित पदों में देखा जा सकता है -

"बौद्ध नाम तब जब मन को निरोध होई ।

बोध के विचार सोध आतम को करिये ।।

सुन्दर कहत ऐसे जीवन ही मुक्ति होई ।

मुए मे मुक्ति कहै ता कूं परिहरिए ।।" [1]

कँवल भारती का कहना है कि जिस समय हिन्दी में नया क्या है? और कविता क्या है? की बहस चल रही थी उस समय दलित कवियों की दूसरी और नयी पीढी तैयार हो रही थी। तात्पर्य यह कि हिन्दी साहित्य की दलित कविता सामाजिक सरोकारों की कविता रही है तथा उसमें साहित्य के सौंदर्यशास्त्र को ढूंढना बेमानी होगी।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है सिद्ध-नाथों के माध्यम से वर्ण व्यवस्था पर प्रहार तो आदिकाल से ही प्रारम्भ हो जाता है, लेकिन सन 1914 में प्रकाशित हीरा डोम की भोजपुरी कविता 'अछूत की शिकायत' को प्रथम दलित कविता माना जाता है -

"खंभवा के फारी पहलाद के बंचवले/ग्राह के मुँह से गजराज के बचवले ।

धोती जुरजोधना कै भइया छोरत रहैं/परगट होके तहाँ कपड़ा बढ़वले ।

मरले रवनवाँ कै पलले भभिखना के/कानी ऊँगरी पै थैके पथरा उठले ।

कहंवा सुतल बाटे सुनत न बाटे अब/डोम तानि हमनी क छुए से डेराले।।"[2]

यह कविता निश्चित रूप से समाज में एक वर्ग की असहाय स्थिति को दर्शाता है। जो भगवान् त्राहनहार के रूप में सभी की रक्षा करते आए| वे ही हमारी जाति को देखकर स्पर्श करने से भी डरते हैं। अर्थात् जाति ही उद्धार का आधार है। यह पीड़ा 'हीरा डोम' एक जाति विशेष वर्ग के लिए सन् 1914 में महसूस करते हैं और एक क्षेत्रीय भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी जो खड़ी बोली को स्थापित करने में अग्रगण्य है वे इस क्षेत्रीय बोली की कविता को सन 1914 में 'सरस्वती' में भी स्थान देते हैं।

हिन्दी साहित्य में दलित कविता की शुरूआत को 20 वीं शताब्दी के आठवें दशक से माना जा सकता है। इसकी पृष्ठभूमि में बौद्ध दर्शन तथा डॉ. अम्बेडकर, फूले के आन्दोलन एवं मराठी दलित साहित्य को महत्वपूर्ण माना जा सकता है। हिन्दी दलित कवियों में ओमप्रकाश वाल्मिकी, श्योराज सिंह बेचैन, कँवल भारती, अनीता भारती, रजनी तिलक, सुशीला टाँकभौरे, मलखान सिंह, एन.सिंह, जयप्रकाश कर्दम को प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। ये सभी कवि तथा अन्य कवि जो दलित कविता के क्षेत्र में रचना कर रहे हैं, निश्चित रूप से उनकी पृष्ठभूमि में बौद्ध दर्शन के प्रभाव को प्रमुखता से देखा जा सकता है।

ओमप्रकाश वाल्मिकी सदियों से पीड़ित जाति की आवाज को उठाते हुए अपनी कविता 'बस्स ! बहुत हो चुका' में लिखते हैं-

"जब भी देखता हूँ मैं/ झाड़ू या गन्दगी से भरी बाल्ट

कनस्तर/ किसी हाथ में/ मेरी रगों में/ दहकने लगते हैं

यातनाओं के कई हजार वर्ष एक साथ/ जो फैले हैं इस धरती पर

ठंडे रेत-कणों की तरह।"[3]

वहीं दूसरी तरफ एक वर्ग विशेष द्वारा समाज में नकारे जाने पर उनकी प्रतिक्रिया 'अच्छा ही हुआ' कविता के माध्यम से व्यक्त होता है जिसमें बौद्ध सिद्धांत 'आत्मबोध' और 'शील' के उदाहरण देखने को मिलते हैं-

"कालग्रस्त अँधेरों की सिसकियाँ/ और मुक्ति का घोषणा-पत्र

लिखने के लिए/ अच्छा ही हुआ/ मैं नहीं जन्मा

उच्चवर्गीय माँ के गर्भ से।"[4]

बुद्ध ने अपने उपदेश को आँखें बंद कर स्वीकारने के लिए नहीं कहा इसीलिए उन्होंने इसे कसौटी पर कसकर परखने की बात की। श्याम सिंह 'शशि' की कविता 'मैंने कब कहा' में ऐसे ही भाव द्रष्टव्य है -

"मैं नहीं हूंगा/ मेरे अक्षर रहेंगे/युग-युगों तक

आकाश में/ मेरे स्वर जियेंगे।"[5]

गौतम बुद्ध का विश्वास मूर्ति पूजा में नहीं था। उन्होंने सभी प्रकार की रीति-परम्परा एवं पूजा पद्धति की बाह्याडम्बर का विरोध किया। ईश्वर की अवधारणा का कोई रूप ही वहाँ विद्यमान नहीं है, इसी बात को मलखान सिंह अपनी कविता 'आख़िरी जंग' में स्वर देते है -

"हू-बी-हू तेरी शक्ल से मिलाती है/ और तेरी बनी-ठनी मेहरिया

नगर की शौकीन बनेगी/ दिखाई देती है हमें |

हम जब भी तेरे कदमों में/ सर रखने की सोचते हैं

तेरा धरती में गड़ा स्थूल लिंग

अग्रज एकलव्य का अँगूठा प्रतीत होता है हमें।"[6]

यह अभिव्यक्ति अनीश्वरवाद से एक कदम आगे बढ़कर भारतीय संस्कृति एवं मिथक को भी अँगूठा दिखाता हुआ सा प्रतीत होता है तथा अपनी अभिव्यक्ति में कुरूपता की सीमा में प्रवेश करता है।

बौद्ध दर्शन समता का सन्देश देता है जहाँ जाति-धर्म एवं वर्ण की दीवार की कोई मान्यता नहीं है। यह ऊँच-नीच के भेदभाव की जगह समानता को महत्व देता है। इसके साथ ही दुःख और वेदना का बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है | रजनी तिलक की कविता 'करोड़ों पदचाप हूँ' में दुःख और वेदना के साथ समता और स्वतंत्रता की मजबूत अभिव्यक्ति होती है -

"मेरे आँसू,आँसू नहीं हैं जंग का पैगाम है। / इकाई नहीं मैं करोड़ों का पदचाप हूँ,

मूक नहीं मैं आधी दुनिया की आवाज हूँ/ नए युग का सूत्रधार हूँ।"[7]

बौद्ध धर्म के अनात्मवाद और अनीश्वरवाद का प्रभाव हिन्दी दलित कविताओं पर देखने को मिलता है | मोहनदास नैमिशराय की कविता 'ईश्वर की मौत' में अनात्मवाद और अनीश्वरवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है क्योंकि यहाँ को कठघरे में खड़ा कर दिया गया है -

"जब मेरे भीतर/ उभरता है सवाल/ ईश्वर का जन्म

किस माँ की /कोख से हुआ था /ईश्वर का बाप कौन?"[8]

इस प्रकार हिन्दी साहित्य की दलित कविताओं में भी निरंतर अस्मिता की खोज है जो अपनी सदियों की दासता एवं यंत्रणा से मुक्ति चाहती है | दलित कविता केवल आक्रोश की ही कविता नहीं है बल्कि सदियों के संताप की यथार्थ अभिव्यक्ति है | इस यथार्थ की अभिव्यक्ति जाहिर है आक्रोश के कारण कहीं-कहीं वीभत्स भी हुई तो अकारण ही उसके सौन्दर्यशास्त्र की खोज सुरु हो जाती है जो कि बेमानी है | महज इतना कहना पर्याप्त होगा कि उसका यथार्थ ही उसका सौन्दर्य है और सौन्दर्यशास्त्र भी | यह सौंदर्यशास्त्र बौद्ध धर्म की आँच से शक्ति एवं गर्मी प्राप्त कर निरंतर आगे की ओर बढ़ रहा है |

सन्दर्भ-ग्रंथ-सूची

I. सुंदर ग्रंथावली भाग 2, सं.रमेश चन्द्र मिश्र ,किताब घर प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 610
II. सरस्वती पत्रिका, सितम्बर 1994 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित - वसुधा /58 ,सितम्बर-जुलाई , 2003पृष्ठ संख्या , 65
III. बस्स बहुत हो चूका!(कविता संग्रह), ओम प्रकाश वाल्मीकि,वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1997, पृष्ठ सं.- 79
IV. अब और नहीं,(कविता संग्रह), ओमप्रकाश वाल्मिकी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2009,पृष्ठ सं. -55
V. अग्निसागर (कविता संग्रह), श्याम सिंह शशिदरिया, पब्लिकेशन.के.के .गुंज1989,दिल्ली, नई, पृष्ठ सं.- 78
VI. सुनो ब्राह्मण, मलखान सिंह, ,kavitakosh.org को देखा गया 2017/2/12 दिनांक ,
VII. पदचाप ,रजनी तिलक,2008,पटना,निधि बुक्स , पृष्ठसं.- 34

VIII. दलित निर्वाचित कविताएँ ,सं.मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती , साहित्य उपक्रम अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, 65 पृष्ठ,2006, प्रथम संस्करण,दिल्ली,

****

डॉ. राहुल सिद्धार्थ
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
भाषा,साहित्य एवं कला संकाय
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय
बारला

Copyright © 2012 - 2019 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat